उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त
विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद – 211021 (उ0प्र0)

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति में वैश्विक दृष्टि

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
(ICSSR)
नई दिल्ली
द्वारा अनुदानित
दिनांक 6 एवं 7 दिसम्बर, 2018

पंजीकरण –प्रपत्र

नामःश्री0/कु0/डा0/प्रो0ः

.....

.....

पदनामः.....

शोधपत्र का शीर्षक.....

.....

.....

विश्वविद्यालय/संस्थान/कालेजः

.....

.....

.....

मोबाइल नं0:.....

ई.मेलः.....

नोट–E-mail आई डी एवं मो.न. अव"य लिखे।

दिनांक.....

प्रतिभागी के

हस्ताक्षर

डिमाण्ड ड्राफ्ट : वित्त आधिकारी, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के पक्ष में देय होगी।
पंजीकरण शुल्क :–500/– नगद/ड्राफ्ट

नोटः– पंजीकरण फार्म के प्रिंट आउट एवं फोटो कापी का प्रयोग किया जा सकता है।

संरक्षक
प्रो.कामेश्वर नाथ सिंह
माननीय कुलपति
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

संगोष्ठी निदेशक
प्रो. सुधांशु त्रिपाठी
प्रभारी निदेशक,
समाज विज्ञान विद्याशाखा,

संयोजक
डॉ. संतोषा कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,
समाज विज्ञान विद्याशाखा,

आयोजन सचिव
सुनील कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाज विज्ञान विद्याशाखा,

सह–आयोजन सचिव
रमेश चन्द्र यादव
परामर्शदाता,
समाज विज्ञान विद्याशाखा,

समन्वयक
डॉ. दीपशिखा श्रीवास्तव
डॉ. अल्का वर्मा
परामर्शदाता,
समाज विज्ञान विद्याशाखा

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय संस्कृति में वैश्विक दृष्टि

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्
(ICSSR)
नई दिल्ली
द्वारा अनुदानित

दिनांक 6 एवं 7 दिसम्बर, 2018

आयोजक
समाज विज्ञान विद्याशाखा

संरक्षक
प्रो.कामेश्वर नाथ सिंह
माननीय कुलपति

संगोष्ठी निदेशक
प्रो.सुधांशु त्रिपाठी
प्रोफेसर

संयोजक
डॉ. संतोषा कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर,

आयोजन सचिव
सुनील कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर

आयोजन स्थल
सरस्वती शैक्षणिक परिसर
उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, शान्तिपुरम्
(सेक्टर–एफ),फाफामऊ, इलाहाबाद – 211021 (उ0प्र0)
दूरभाषः– **07525048032,7525048035,7525048148**

E- mail Id:
nssos2018new@gmail.com
Website:www.uprtou.ac.in

संगोष्ठी के बारे में:–

भारतीय संस्कृति वि"व के इतिहास में कई दृष्टियो से अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं गौरव"ाली है। यजुर्वेद के वाजसनेही सहिता में स्पष्ट रूप सें कहा गया है कि "**सा संस्कृति प्रथमा वि"ववारा**" अर्थात यह आदि संस्कृति वि"व के कल्याण के लिए थी। यह मानवीय चिन्तन,मनन, ध्यान, तथा सद्गुणों की सुन्दर, समरस अभिव्यक्ति एवं व्याख्या है। इसमे विविधताओं का समावे"ा है जो भौतिक, सामाजिक, धार्मिक, भाषागत, नृतात्विक आदि विविध प्रकार की है किन्तु उसमें अंतनिहित एकता सदैव उसके समग्र विकास का कारण रही है। भारतीय संस्कृति वि"व की आदि–संस्कृतियों में से एक है जो अपनी सांस्कृतिक विरासत, वि"ाष्टताओं, विविधताओं एवं परम्पराओं के लिए प्रसिद्व है। भारत की भौगोलिक इकाई उसके महाद्वीपीय विस्तार और समग्रता का मूल आधार है जिसकी प्राकृतिक एवं अलघ्य सीमाओं की वि"ाालता का अनुभव मनुष्य ने सदैव किया है। प्रारम्भ से ही भारतवासियो ने दे"ा की वि"ाल भौगोलिक इकाई को एक प्रेरणा और श्रेय की वस्तु समझा और उसके आद"र् मातृरूप की कल्पना को स्थापित किया। यह गंगा के उस प्रबल प्रवाह के समान है जिसमें अनेक विदे"ाी संस्कृति की धारायें आ कर मिली और सहायक नदियों की तरह विलीन हो गयी। संस्कृति मूलतः एक मूल्य दृष्टि और उसमें अन्तर्निहित होने वाले प्रभावों व संस्कारो का नाम है। ये संस्कार समाज को, व्यक्ति का, परिवार को, प्राणिमात्र से ही नही बल्कि वस्तु मात्र से जोड़ते है और जीव–जन्तुओं के साथ मानव जाति के सम्बन्धों पर आधारित ये सम्बन्ध ज्ञान के विकास और सम्वेदन के विस्तार के साथ बदलते रहते है। यह बात महत्वपूर्ण है कि कोई विकासशील राष्ट्र अपने अतीत के सहारे कायम नही रह सकता है। बल्कि यह भी सत्य है कि वह अपने अतीत से कट कर भी नही रह सकता और न अतीत से जुड़े विना वह अपने आपको सुरक्षित रख सकता है। भारतीय संस्कृति में आध्यात्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है जिसमें भौतिक सुखो की तुलना में आत्मिक सुख के प्रति आग्रह देखा जा सकता है। चतुराश्रम व्यवस्था–ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ, तथा सन्यास आश्रम तथा पुरूषार्थ चतुष्टय–धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का विधान मनुष्य की आध्यात्मिक साधना के ही प्रतीक है। जीवन का मुख्य ध्येय मूल्यों का अनुरक्षण करते हुए मोक्ष माना गया है। भारतीय संस्कृति की यह वि"ोषता रही है कि व्यक्ति अपनी परिस्थतियों के अनुरूप मूल्यों की रक्षा करते हुए कोई भी विचार मत एवं धर्म अपना सकता है। भारतीय मनीषा ने ई"वर को सर्वव्यापी, कल्याणकारी, सर्वशक्तिमान मानते हुए विभिन्न धर्मो, मतो एवं सम्प्रदायों को उस परम ई"वर तक पहुचाने का भिन्न–भिन्न मार्ग प्रतिपादित किया (एकं सद विप्राः बहुधा वदन्ति)। डॉ. बी.ए.स्मिथ ने दे"ा की सांस्कृतिक मान्यताओं के बारे में लिखा है कि'भारत में गहरी मौलिक एकता है। यह एकता रक्त, रंग, रीति–रिवाज, भाषा, वे"ा–भूषा तथा आचार–विचार आदि असंख्य विषमताओं का अतिक्रमण कर जाती है"। हरवर्ट रिजले की मान्यता है कि भारत की मौलिक एकता के फलस्वरूप हिमालय से कन्याकुमारी तक दे"ा का जन जीवन बधा हुआ है।

प्रो0 राधा कुमुद मुकर्जी के अनुसार "भारतीय संस्कृति में व्याप्त आधारभूत एकता वर्तमान भारत के राष्ट्रीय जीवन को रचनात्मक बनाने में वि"ोष सहायक सिद्ध हुए"। डॉ0 सम्पूर्णानन्द ने लिखा है कि "भारतीय संस्कृति ने सैकड़ों बाधाओं संकटों और उतार–चढ़ाओं क बीच अपनी अस्मिता को कायम रखा है जबकि अन्य कई समकालीन संस्कृतियॉ कोई चिन्ह पीछे छोड़े बिना काल की धारा में विलीन हो गयी है"। भारतीय चिन्तन सदैव से ही सबके साथ सहभागिता, सह–अस्तित्व एवं परस्पर मैत्री सम्बन्धों के दृढ़ीकरण पर बल देता रहा है। इसके विविध स्वरूप में आद्योपान्त एक समन्वयवादी चेतना व्याप्त है। जीवन की विभिन्न विधाओ ंऔर क्षेत्रों में सर्वांगीण विकास के साथ–साथ उनके पारस्परिक मूल्यो और समन्वयात्मक एकसूत्रता का प्रयास भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है। भारतीय संस्कृति के विकास को आधुनिक जीवन के संदर्भ में देखना चाहिए और आधुनिक जीवन हमारी सांस्कृतिक धरोहर तथा राष्ट्रीय चेतना द्वारा प्रभावित एवं निर्दे"ात होना चाहिए। मानवता को आज के युग में वैज्ञानिक एवं नैतिक मूल्यों क विना"ा से बचना है तो भारतीय संस्कृति में निहित श्रेयस्कर संदे"ो–आध्यात्मिकता, मानवीयता,नैतिकता,सहिष्णुता,उदारता,सहभागिता,सह–अस्तित्व, "ाान्ति,करूणा,मैत्री,तथा वि"व–बन्धुत्व जैसे शा"वत मूल्यो एवं सिद्वान्तो को वै"वक स्तर पर अपनाना होगा। एकमानवतावाद

का बोध भारतीय मानस में व्याप्त है जो आधुनिक वि"व की आव"यकता तथा भारतीय संस्कृति का सार है।

संगोष्ठी के महत्वपूर्ण विषय निम्नवत् हैं:

1–भारतीय संस्कृति के प्रति ऐतिहासिक दृष्टिकोण

2–.भारतीय संस्कृति का मानवीय स्वरूप

3–भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक स्वरूप

4–भारतीय संस्कृति की मूल्य–चेतना एवं स्वरूप

5–भारतीय संस्कृति में धर्म,अवधारणा एवं स्वरूप

6–भारतीय संस्कृति का भारतीय सीमाओं के बाहर विस्तार

संभावित प्रतिभागी

शोध–छात्र, विद्यार्थी, प्राध्यापक, संकाय सदस्य (फेकल्टी–मेम्बर्स) तथा इस पृष्ठभूमि से सम्बन्धित विद्वान आदि।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

भाोध–पत्र प्रस्तुतीकरण –

प्रतिभागी ए 4 साइज में शोधपत्र का सारा"ा (जो 150 शब्दों से 200 शब्दों का हा) निम्नलिखित **E-mail ID** **nssos2018new@gmail.com** पर प्रेषित करें एवं टंकित पूर्ण शोध-पत्र की हॉर्ड कापी ३० नवम्बर २०१८ तक **-समाज विज्ञान विद्याशाखा,, उ.प्र. राजर्षि टण्डन मु.वि.वि.इलाहाबाद** को अव"य प्रेषित करें। चयनित स्तरीय शोधपत्रों को ही वाचन की अनुमति दी जायेगी। शोधपत्र क्रुतिदेव–010, फान्ट साइज 14, स्पेसिंग 1.5 पर किया होना चाहिए।

रजिट्रेशन फीस

प्राध्यापक, विद्यार्थी एवं शोध छात्र : रू0 500.00

यात्रा भत्ता/भोजन एवं ठहरने के लिए

प्रतिभागी अपने यात्रा/रहने का खर्च स्वंय वहन करेंगें। उत्तर प्रदे"ा राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा केवल जलपान,मध्यान्ह भोजन की व्यवस्था उपलब्ध होगी। आमंत्रित सदस्य/विशेषज्ञों को ही यात्रा–भत्ता एवं अन्य सुविधायें उपलब्ध होगी।

सलाहकार समिति

- प्रो. पी.के. पाण्डेय, प्रभारी निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा
- डॉ. ओम जी गुप्ता, निदेशक, प्रबन्धन विद्याशाखा
- डॉ. पी.पी. दुबे, कृषि विद्याशाखा
- डॉ. आर.पी.एस. यादव, मानविकी विद्याशाखा
- डॉ. आशुतोष गुप्ता, निदेशक, विज्ञान विद्याशाखा
- प्रो.(डा.)जी. एस. शुक्ला, निदेशक, स्वास्थ्य विद्याशाखा
- डॉ. टी.एन. दुबे, पुस्तकालयाक्ष्यक्ष
- डॉ.अरूण कुमार गुप्त,कुलसचिव
- श्री अजय कुमार सिंह, वित्त अधिकारी

आयोजन समिति

- डा.विनोद कुमार गुप्त, मानविकी विद्याशाखा
- डॉ0 रुचि बाजपेई, मानविकी विद्याशाखा
- डॉ0 श्रुति, विज्ञान विद्याशाखा
- डॉ. मीरा पाल, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा
- डॉ0 ज्ञान प्रका"ा यादव, प्रबन्धन विद्याशाखा
- डॉ0 देवे"ा रंजन त्रिपाठी, प्रबन्धन विद्याशाखा
- डॉ. राम जनम मौर्या, सहा0 पुस्तकालयाध्यक्ष
- डॉ. दिने"ा सिंह, शिक्षा विद्याशाखा
- डॉ. जी. के. द्विवेदी, शिक्षा विद्याशाखा
- डॉ0 मुके"ा कुमार, शिक्षा विद्याशाखा
- डॉ. साधना श्रीवास्तव, मानविकी विद्याशाखा
- सुश्री मारिषा, विज्ञान विद्याशाखा
- श्री मनोज कुमार बलवन्त, विज्ञान विद्याशाखा
- डॉ. सती"ा चन्द्र जैसल, मानविकी विद्याशाखा
- डॉ. स्मिता अग्रवाल, मानविकी विद्याशाखा
- डॉ. अतुल मिश्रा, मानविकी विद्याशाखा
- डॉ. गौरव संकल्प, प्रबन्धन विद्याशाखा
- डॉ दिने"ा गुप्ता, विज्ञान विद्याशाखा
- डॉ. नीता मिश्रा, शिक्षा विद्याशाखा
- डॉ.विकास सिंह, विज्ञान विद्याशाखा
- श्री अमित कुमार सिंह, स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा
- डॉ.मानस आनन्द, मानविकी विद्याशाखा,
- डॉ.धर्मवीर सिंह, विज्ञान विद्याशाखा
- डॉ.ि"ावेन्द्र प्रताप सिंह, मानविकी विद्याशाखा
- डॉ.रवीन्द्र प्रताप सिंह, मानविकी विद्याशाखा
- श्री मुके"ा कुमार सिंह, मानविकी विद्याशाखा
- श्री पंचरतन सिंह, मानविकी विद्याशाखा

तकनीकी समिति

1.श्री नीरज मिश्रा 2. श्री धीरज रावत 3. शहबाज अहमद

विश्वविद्यालय के बारे में–

उत्तर प्रदे"ा राजर्षि टण्डन मुक्त वि"वविद्यालय उत्तर प्रदे"ा सरकार का एकमात्र मुक्त वि"वविद्यालय है। इस वि"वविद्यालय का नामकरण हिन्दी के प्रबल समर्थक, प्रख्यात स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, भारतरत्न राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के नाम पर किया गया। यह वि"वविद्यालय गृहणियों, विकलांगों, दलितों, आर्थिक रूप से विपन्न वर्ग, सेवारत व्यक्तियों तथा सुदूर ग्रामीण अंचलों के निवासियों तक उच्च ि"ाक्षा को पहुँचाने के लिए दृढ़ संकल्प है। अत्यल्प समय में ही इस वि"वविद्यालय ने उच्च ि"ाक्षा के क्षेत्र में नवीन कीर्तिमान स्थापित किए हैं। इस वि"वविद्यालय का कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण उत्तर प्रदे"ा है। यह वि"वविद्यालय वर्तमान मे 1000 अध्ययन केन्द्रों तथा 11 क्षेत्रीय केन्द्रों के माध्यम से उच्च ि"ाक्षा के प्रका"ा को जन–जन तक पहुँचा रहा है। वर्तमान में ि"ाक्षार्थी विभिन्न स्तर एवं प्रकृति के कार्यक्रमों में नामांकित होकर उच्च ि"ाक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वि"वविद्यालय का मुख्यालय सेक्टर– एफ, शांन्तिपुरम् (फाफामऊ), इलाहाबाद में स्थित है। वि"वविद्यालय गंगा, यमुना तथा सरस्वती तीन परिसरों में अवस्थित है। इलाहाबाद रेलवे जंक"ान से वि"वविद्यालय की दूरी लगभग 15 किमी. तथा बस स्टैण्ड से लगभग 13 किमी. है। वि"वविद्यालय आने–जाने के लिए यातायात की सुविधाएँ सदैव उपलब्ध रहती हैं।

इलाहाबाद एक दृश्टि में–

प्रकृष्ट यजन की भूमि होने के कारण इलाहाबाद का प्राचीन नाम प्रयाग है। गंगा, यमुना एवं अन्तःसलिला सरस्वती के पावन तट पर स्थित प्रयाग के वर्णन से सभी धार्मिक एवं साहित्यिक वाड्मय भरे–पड़े हैं। गंगा, यमुना एवं सरस्वती की त्रिवेणी की भाँति ही यहाँ आध्यात्म, राजनीति एवं साहित्य भी त्रिवेणी के रूप में प्रवाहित है। प्रयाग में संगम के तट पर प्रत्येक बारह वर्षों के अन्तराल पर वि"वप्रसिद्ध कुम्भ का मेला लगता है। प्रयाग की इस पावन धरती पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। इलाहाबाद का मौसम सामान्य एवं खु"ानुमा रहता है।